गुरुमाई चिद्विलासानन्द द्वारा लिखित पुस्तक

अन्तर-शुद्धि के सोपान

उद्धरण १८

जब तुम फूल को सोने में डुबोते हो तो वह चिरस्थायी हो जाता है। जब तुम मन को प्रभु के चिन्तन में स्नान कराते हो तो उसे शाश्वत शुद्धता प्राप्त होती है।

© २०२२ एस. वाय. डी. ए. फ़ाउन्डेशन®। सर्वाधिकार सुरक्षित।

गुरुमाई चिद्विलासानन्द, *अन्तर-शुद्धि के सोपान : दिव्य सद्गुणों का योग* अध्याय ११ "शुद्ध हृदय," से उद्धृत [चित्शक्ति पब्लिकेशन्स, २०१३], पृ. १६४।